अमर उजाला

नई दिल्ली । मंगलवार, 16 अप्रैल 2019

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

विफलता सफलता की कुंजी है; प्रत्येक गलती हमें कुछ सिखाती है...
- मोरीहि उशीबा

जापानी मार्शल आर्ट्स गुरु

सुप्रीम कोर्ट की कड़ाई के बाद ही चुनाव आयोग ने आपत्तिजनक टिप्पणियों के कारण योगी आदित्यनाथ, मायावती, मेनका गांधी और आजम खां के प्रचार करने पर आंशिक रोक लगाई है। प्रचार के दौरान इस तरह की टिप्पणियां बताती हैं कि चुनावी विमर्श कितना नीचे गिर गया है।

आचार संहिता का मखौल

चुनाव आयोग ने चुनाव प्रचार के दौरान आपत्तिजनक टिप्पणियां करने के मामलों में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और पूर्व मंत्री आजम खां के साथ ही पूर्व मुख्यमंत्री मायावती और केंद्रीय मंत्री मेनका गांधी के जवाब को पर्याप्त न मानकर उनके प्रचार करने पर क्रमशः 72-72 घंटे और 48-48 घंटे का प्रतिबंध लगाया है। मगर आयोग ने यह कार्रवाई तब की है, जब सुप्रीम कोर्ट ने आदर्श आचार संहिता के मामलों में कड़ाई दिखाते हुए उससे कार्रवाई के बारे में पूछा। हकीकत यह है कि घृणा फैलाने और धार्मिक आधार पर ध्रुवीकरण करने वाले भाषणों को लेकर आयोग का रवैया ढुलमुल रहा है और उसने खुद को संबंधित नेताओं को नोटिस और एडवाइजरी भेजने तक सीमित रखा है। मायावती ने पहले चरण के मतदान से पहले एक रैली में मुसलमानों से एकजुट होकर वोट डालने की अपील की थी, वहीं इसके जवाब में योगी आदित्यनाथ ने 'अली', 'बजरंग बली' और 'ग्रीन वायरस' जैसी टिप्पणियां की थीं। मायावती की तुलना में आदित्यनाथ पर अधिक समय तक रोक की एक वजह यह है कि आयोग 'सेना संबंधी' उनके बयान के बारे में उन्हें पहले आगाह कर चुका था। यह विडंबना है कि एक ओर तो हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक चुनाव को लेकर गर्व करते हैं, वहीं चुनावों के दौरान राजनीतिक विमर्श लगातार नीचे गिरता जा रहा है, जिसमें जनता से जुड़े मुद्दे हाशिये पर चले जा रहे हैं। सपा नेता आजम खान की रामपुर में भाजपा की अपनी प्रतिद्वंद्वी जयाप्रदा पर की गई अभद्र टिप्पणी और मेनका गांधी द्वारा वर्ग विशेष को निशाना बनाए जाने से पता चल रहा है कि इन नेताओं को आयोग का भय नहीं ही है। पिछले आम चुनाव में भी चुनाव आयोग ने आजम खान पर बदजुबानी के कारण प्रचार करने पर रोक लगाई थी। वास्तव में आचार संहिता के उल्लंघन और नेताओं की बदजुबानी के मामलों की लंबी सूची है। आयोग ने सर्वोच्च अदालत के समक्ष खुद को 'बेबस' और 'दंतहीन' बताया है, जबकि हकीकत यह है कि संविधान के अनुच्छेद 324 के तहत आयोग के पास आचार संहिता का उल्लंघन करने वाले नेताओं और राजनीतिक दलों के खिलाफ कार्रवाई करने का पर्याप्त अधिकार है। अभी तो एक ही चरण का चुनाव हुआ है; आयोग को ऐसे सारे मामलों में कड़ाई से पेश आना चाहिए, क्योंकि इससे उसकी अपनी साख जुड़ी हुई है।

अभी खुला खेल है यह चुनाव

नरेंद्र मोदी की अगुआई में राजग आज भी चुनावी दौड़ में सबसे आगे है, लेकिन पहले चरण के मतदान के बाद इस बार का लोकसभा चुनाव और ज्यादा दिलचस्प, आकर्षक और खुला खेल बन गया है।

रशीद किदवई, वरिष्ठ पत्रकार

पहले चरण के मतदान के बाद इस बार का लोकसभा चुनाव और भी ज्यादा दिलचस्प, आकर्षक और खुला खेल बन गया है। पारंपरिक नजरिये से देखें, तो नरेंद्र मोदी की अगुआई में भाजपा-राजग आज भी चुनावी दौड़ में सबसे आगे है, लेकिन चुनावों की जटिलता, मतदाताओं की अस्थिरता, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना जैसे कुछ राज्यों में भाजपा में मजबूत क्षेत्रीय नेतृत्व का अभाव और मौजूदा सत्तारूढ़ गठबंधन के सांसदों के प्रति सत्ता-विरोधी रुझान ने 17वीं लोकसभा के चुनाव को ज्यादा प्रतिस्पर्धी बना दिया है। चुनावी राजनीति में उत्तर प्रदेश की पकड़ लगातार बनी हुई है। अस्सी लोकसभा सीटों का नतीजा फैसला करेगा कि अगले पांच साल तक कौन दिल्ली की गद्दी पर शासन करेगा। पहली नजर में मोदी का करिश्मा बरकरार है और राष्ट्रवाद तथा राष्ट्रीय सुरक्षा के मामले में भाजपा को बढ़त हासिल होनी चाहिए। योगी आदित्यनाथ की अपील और वक्तृत्व कौशल ने भी भाजपा को धार दी है।

लेकिन राजनीतिक परिदृश्य के दूसरी तरफ जातिगत समीकरण काम कर रहे हैं। कम से कम देवबंद की रैली से यह स्पष्ट था कि जाट, यादव, दलित और मुसलमान एक साथ हैं। यह सिर्फ भीड़ नहीं थी, बल्कि एक सभा थी, जिसमें अक्सर आपस में लड़ने वाली जातियां एक-दूसरे के साथ अपनी रोजी-रोटी के मामलों को प्रमुखता देने के लिए सामूहिक संकल्प ले रही थीं। अगर यह खुशमिजाजी वोट और सीटों में तब्दील होती है, तो उत्तर प्रदेश में भाजपा के लिए समस्या है। यदि यहां भाजपा को चालीस से ज्यादा सीटों का नुकसान होता है, तो पश्चिम बंगाल, ओडिशा, असम और पूर्वोत्तर से उसकी भरपाई नहीं हो सकती।

कर्नाटक को छोड़कर दक्षिण भारत में भी मजबूत पैठ न होने के कारण भाजपा के लिए मुश्किल है। चेन्नई और तमिलनाडु के कुछ इलाकों के दौरे से इन पंक्तियों के लेखक को पता चला कि अन्नाद्रमुक और भाजपा के गठबंधन की तुलना में द्रमुक और कांग्रेस के गठबंधन के प्रति कहीं ज्यादा आकर्षण और स्वीकार्यता है। जयललिता और करुणानिधि जैसे करिश्माई नेताओं की गैर-मौजूदगी में एम के स्टालिन बड़े नेता बनकर उभरे हैं। यह एक ऐसा राज्य है, जहां मोदी की लोकप्रियता राहुल गांधी से कम है। पश्चिम बंगाल, ओडिशा, केरल, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना ऐसे राज्य हैं, जहां मोदी की लोकप्रियता क्षेत्रीय नेताओं की तुलना में कम है।

23 मई का दिन हमें एक महत्वपूर्ण जवाब देगा। क्या मोदी में वह ताकत और करिश्मा है कि वह जातिगत समीकरणों, सत्ता विरोधी रुझानों और क्षेत्रीय नेताओं को मात दे सकें? अगर वह यह उपलब्धि हासिल कर लेते हैं, तो देश उन्हें जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी की लीग में शामिल करेगा, जबकि अटल बिहारी वाजपेयी से एक पायदान आगे का नेता मान लेगा।

अब कांग्रेस पर भी एक नजर डालने की जरूरत है। कांग्रेस संगठन के भीतर कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं, जो बताते हैं कि 17वीं लोकसभा का स्वरूप चाहे जो भी हो, 23 मई के बाद देश की सबसे पुरानी पार्टी में बदलाव होंगे। राहुल ने सबके प्रति न्याय करते हुए पार्टी पदानुक्रम में सभी स्तरों पर जवाबदेही लागू की है। उदाहरण के लिए, महाराष्ट्र में राहुल ने पूर्व मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण को पुणे लोकसभा सीट की जिम्मेदारी सौंपी है, जबकि महाराष्ट्र विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष राधाकृष्ण विखे पाटिल को औरंगाबाद का प्रभारी बनाया है और बाला साहेब थोराट को शिरडी लोकसभा सीट का। चव्हाण, पाटिल और थोराट को जिम्मेदारी सौंपने का मतलब यह सुनिश्चित करना है कि इन तीनों सीटों पर कांग्रेस के उम्मीदवार बड़े अंतर से जीत हासिल कर सकें।

राहुल चुनावी मैदान में कई बड़े और शक्तिशाली लोगों को आगे बढ़ाने में सफल रहे हैं, जो सोनिया गांधी नहीं कर पाई थीं। भोपाल से दिग्विजय सिंह, शोलापुर से सुशील कुमार शिंदे, अमरेली से परेश धनानी, फर्रुखाबाद से सलमान खुर्शीद, सासाराम से मीरा कुमार, चंडीगढ़ से पवन कुमार बंसल आदि इसके उदाहरण हैं कि कांग्रेस अध्यक्ष इन वरिष्ठ नेताओं को निर्देश दे रहे हैं कि वे चुनाव में अपनी क्षमता साबित करें।

ऐसे ही घोषणापत्र की तैयारी भी असाधारण रही, जिसके बारे में राहुल ने कहा कि कई गैर राजनीतिक व्यक्तियों से सलाह ली गई, जिनमें से कई अपने-अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ हैं। अतीत के विपरीत इसमें ताजगी है। 2019 के घोषणापत्र ने सबका ध्यान खींचा है और आलोचकों तक ने इसकी प्रशंसा की है।

अमेठी की कहानी जटिल है। जातिगत समीकरणों को देखते हुए राहुल को हराना आसान नहीं है, क्योंकि उन्हें सपा-बसपा गठबंधन का समर्थन मिल रहा है। बसपा-सपा के मतदाताओं को भाजपा में स्थानांतरित करना आसान नहीं है और न ही मतदाता स्वयं भाजपा की तरफ जाने वाले हैं, चाहे मतदाताओं के बीच राहुल की व्यक्तिगत मौजूदगी हो या नहीं। याद रखने वाली बात है कि 2014 की मोदी सुनामी में भी मतदाता भाजपा की तरफ नहीं गए।

टॉम वडक्कन को छोड़कर 2014 के विपरीत पार्टी के कोई महत्वपूर्ण नेता पार्टी छोड़कर नहीं गए हैं। कांग्रेस के भीतर के असंतोष से निपटने में राहुल अब तक दृढ़ रहे हैं। जितिन प्रसाद, प्रिया दत्त और मिलिंद देवड़ा जैसे उनके कुछ करीबी सहयोगी परेशान थे। राहुल ने तेजी से काम किया और महत्वपूर्ण चुनाव के दौरान उन्हें पार्टी बदलने या घर पर बैठने से रोका। दूसरे स्तर पर उन्होंने शत्रुघ्न सिन्हा, मनीष खंडूरी और अन्य भाजपा नेताओं को पार्टी में शामिल किया। अभिनेत्री उर्मिला मातोंडकर को टिकट देने से काफी दिलचस्पी पैदा हुई है, क्योंकि राजनीति में प्रवेश करने वाले फिल्म अभिनेता अक्सर संकेत करते हैं कि हवा किस तरफ बह रही है। शत्रुघ्न सिन्हा हवा का रुख भांपने में माहिर हैं और राजनेताओं के राजनेता हैं।

इस बार कांग्रेस को सफल बनाने के लिए तीन गांधी मैदान में हैं। अगर सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी और राहुल गांधी कांग्रेस को सौ से ज्यादा सीटें नहीं दिला पाते, तो कांग्रेस और गांधियों के बीच का रिश्ता धीरे-धीरे टूटना शुरू हो जाएगा और इस बात की भारी संभावना है कि मोदी को पूर्ण बहुमत मिल जाए। ऐसी स्थिति में शीघ्र ही कांग्रेस के जनता दल की तरह बिखरने की आशंका है।

अंतर्ध्वनि

>> दिलीप चित्रे

भाषा व्यक्ति को अपने अंतर्मन से भी जोड़ती है

कई अन्य दक्षिण एशियाई लेखकों की तरह मैं भी बहुभाषी हूं। मैं गुजरात के वडोदरा में मराठी बोलने वाले परिवार में पैदा हुआ और अपने जीवन के शुरुआती बारह साल मैंने धाराप्रवाह चार भाषाएं-मराठी, गुजराती, हिंदुस्तानी और अंग्रेजी बोलते हुए बिताईं। शुरू के तीन साल मैंने अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़ाई की, फिर दूसरे स्कूल में मराठी में पढ़ाई होती थी, लेकिन वहां गुजराती भी एक विषय था। इसके अलावा हिंदुस्तानी, बांग्ला और उर्दू मैंने अपनी जिज्ञासा से सीखी। फिर मैं मुंबई चला आया, जहां हाई स्कूल के बाद कॉलेज में मैंने अंग्रेजी साहित्य में ग्रेजुएट किया और ट्यूशन पढ़ाने के अलावा पत्रकार के रूप में काम करने लगा। मेरा पहला काव्य संग्रह मराठी में छपा। फिर मैं तीन साल के अनुबंध पर सरकारी हाई स्कूल में अंग्रेजी पढ़ाने इथियोपिया चला गया। मैंने वहां की राष्ट्रीय भाषा भी सीख ली थी, लेकिन बाद में अभ्यास न करने के कारण उसे भूल गया।

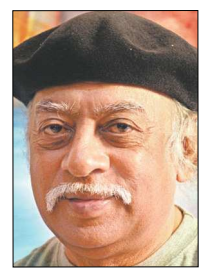

भाषा सभी व्यक्तिगत और व्यावसायिक संबंधों का माध्यम है। रचनात्मक लेखन लेखक और पाठक के बीच एक अंतरंग संवाद है, जिसमें दोनों एक दूसरे के लिए काल्पनिक होते हैं। मात्र एक ही चीज वास्तविक होती है भाषा, जो उन्हें जोड़ती है। लेकिन भाषा व्यक्ति को बाहरी दुनिया के साथ अपने अंतर्मन से भी जोड़ती है। यह क्षणिक और अस्थायी स्व-छवियों के माध्यम से आत्म-मान्यता का साधन भी है। यह हमारे आध्यात्मिक और धर्मनिरपेक्ष अनुभवों का मूल है। मैंने सोलह साल की उम्र से गंभीरता से कविता लिखना शुरू किया, जब कवि और कलाकार के रूप में जीने का फैसला किया। कई बार यह वास्तव में बहुत कठिन साबित हुआ। हालांकि, मेरी जिज्ञासा और मानवीय अनुभव के दायरे ने मेरे जीवन को रोमांचक बना दिया।

-मशहूर मराठी कवि, चित्रकार और फिल्म निर्माता

मंजिलें और भी हैं

>> साधना राजकुमार

गौरैयों के लिए काम किया क्योंकि वे हमारे लिए जरूरी हैं

जब मैं छोटी थी और चेन्नई के पैराम्बुर में रहती थी, तब मुझे और मेरे भाई को साल में दो बार मुंबई जाने का इंतजार रहता था। मुंबई में हमारे दादा-दादी रहते थे। मुंबई में दादा हमारे साथ खेलते और हमें बाहर घूमने ले जाते, जबकि दादी हमें बहुत कुछ बनाकर खिलाती थीं। हमारे खुशी-खुशी मुंबई जाने का एक और कारण था। वह था, रोज अपने आसपास गौरैयों को देखना। दादा जी रोज सुबह नहाने के बाद एक मुट्ठी अनाज एक प्लेट में लेते और उसे एक खिड़की पर गौरैयों के लिए रख देते। थोड़ी ही देर में गौरैयों का झुंड खिड़की पर उतर आता और अगले पंद्रह-बीस मिनट तक वे दाने चुगते रहते। मैं, भाई और दादा जी चुपचाप उन गौरैयों को देखते रहते। घर लौटकर मैं भी गौरैयों को अनाज देने लगी।

दिन बीतते गए। मुंबई जाना छूट गया और पढ़ाई खत्म कर मैंने स्वास्थ्य के क्षेत्र में अपना करियर बनाया। मैं एक पोषाहार विशेषज्ञ और फिटनेस कंसल्टेंट हूं। जीवन की आपाधापी के बीच गौरैयों को कब भूल गई, पता ही नहीं चला। पर स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करते हुए अचानक मुझे गौरैयों की याद आई। उसी दौरान इंटरनेट पर गौरैयों के बारे में जानने की कोशिश की, तो पता चला कि उनका होना पर्यावरण के लिए अच्छा है, लेकिन पूरी दुनिया में गौरैयों की आबादी घटने लगी है। मुझे यह भी जानकारी मिली कि लंदन में गौरैयों की आबादी बढ़ाने के लिए स्थानीय प्रशासन कई तरह के उपाय कर रहा है, जिनमें मानव आबादी से सटे पेड़ों आदि पर घोंसले बनाकर टांगना आदि शामिल है।

पता चला कि रेडिएशन के कारण और भोजन व पानी के अभाव से गौरैयों की संख्या कम हुई है।

इसके बाद मैंने चेन्नई में भी गौरैयों की आबादी बढ़ाने के लिए काम शुरू किया। इसके तहत मैंने छुट्टियों के दिन अलग-अलग इलाकों में जाकर आबादी के आसपास के इलाकों में पेड़ों और पुराने घरों के रोशनदान आदि में हाथ से बने घोसले रख दिए। मैंने इस सिलसिले में खासकर पैराम्बुर, टोंडियारपेट, ओल्ड वॉशरमैनपेट, मेलापोर, सैंटहोम जैसे इलाकों का दौरा किया, जहां गौरैये अब बहुत कम दिखते हैं। चूंकि लकड़ी का घोसला बनाना महंगा पड़ता था, ऐसे में, मैंने एक स्थानीय कुम्हार से मिट्टी के घोसले बनाने को कहा। मैंने शहर के लोगों को अपनी इस मुहिम से जोड़ने का फैसला किया। मैं रविवार की सुबह मरीना बीच पर महात्मा गांधी की प्रतिमा के पास घोसलों के साथ खड़ी हो जाती और वहां से गुजरने वाले लोगों को गौरैयों के बारे में जागरूक कर उन्हें एक घोसला देती। हालांकि सभी लोग इस मामले में उत्साही नहीं थे, लेकिन ज्यादातर लोगों ने इस काम में बहुत उत्साह दिखाया। मैं लोगों को अपना फोन नंबर भी देती और कहती कि घोसले में गौरैये के आने पर मुझे सूचित किया जाए। विशेषज्ञों से बात करने पर पता चला कि रेडिएशन के कारण और भोजन व पानी के अभाव से गौरैयों की संख्या कम हुई है। सच यह है कि चेन्नई शहर के अनेक तालाब या तो सूख गए हैं या उनको पाटकर उन पर बहुमंजिली इमारतें खड़ी कर दी गई हैं। पिछले दिनों मेरी मां पैराम्बुर से बेसेंट नगर में शिफ्ट हो गईं, तो मैंने उनके फ्लैट की बालकनी में भी एक घोसला रख दिया। जब पता चला कि उसमें दो गौरैये रहने लगे हैं, तो मुझे बहुत खुशी हुई। मेरे प्रयास से चेन्नई में गौरैयों के प्रति जैसी जागरूकता आई है, मैं चाहती हूं कि वैसी ही जागरूकता पूरे देश में फैले।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

अफगानिस्तान में नहीं बदले हालात

तालिबान ने वादा किया है कि वह अमेरिकी फौज की वापसी के बाद अफगान जमीन पर अल कायदा और इस्लामिक स्टेट को पैर जमाने नहीं देगा। पर लगता नहीं कि अमेरिका जिस तेजी से अपनी फौज की वापसी चाहता है, वह अभी संभव है।

चयनिका सक्सेना

अफगान विवाद को खत्म करने के लिए की जा रही अनेक पहलों के बीच अफगानिस्तान पुनर्गठन के लिए अमेरिका के विशेष प्रतिनिधि जल्माय खलीलजाद के नेतृत्व में की जा रही पहल अहम है, क्योंकि इसने तालिबान को सीधे हॉट लाइन के जरिये अमेरिका से संपर्क उपलब्ध कराया है। जबकि 2002 में ऐसे संपर्क से इनकार कर दिया गया था, जब तालिबान ने कहा था कि यदि अमेरिका अफगानिस्तान में बमबारी रोक दे, तो वह ओसामा बिन लादेन को सौंपने के बारे में बात कर सकता है। 17 वर्षों के बाद हालात खराब ही हुए हैं। अनुमान है कि अफगानिस्तान के 70 फीसदी हिस्से में तालिबान सक्रिय हैं। उन्होंने सिर्फ वादा किया है कि वह अमेरिकी फौज की वापसी के बाद अफगान जमीन पर अल कायदा और इस्लामिक स्टेट को पैर जमाने नहीं देगा। मौजूदा घटनाक्रम देखकर लगता नहीं कि अमेरिका जिस तेजी से अपनी फौज की वापसी चाहता है, वह अभी संभव है।

पहली बात, यह है कि वार्ताओं पर वार्ता। खालिजाद को यह बताने में चार महीने लग गए कि उनका शांति समझौता वापसी के समझौते जैसा नहीं है। यानी वार्ताओं का अंत नहीं है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने अपने स्टेट ऑफ यूनियन भाषण में फौज में कटौती और आतंकवाद विरोधी अभियान में तेजी लाने की बात की थी। अफगानिस्तान में आतंकवाद विरोधी फौज का मतलब ही है वहां लंबे समय तक अमेरिका की मौजूदगी। इन वार्ताओं का दूसरा पहलू है अफगानिस्तान की सरकार के साथ विश्वासघात। अफगान सरकार की हैसियत क्रिकेट स्टेडियम में दर्शक जैसी हो गई है, जिसे कभी कभी तालियां पीटनी है। मॉस्को में अंतर अफगान वार्ता में उसकी गैर-मौजूगी से इसकी पुष्टि ही हुई है।

अफगान सरकार राष्ट्रवादी भंगिमाओं और विकल्प तलाशते हुए अपनी भूमिका तलाश रही है। उसके राजनीतिक विमर्श में आए बदलाव को भी देखा जा सकता है। राष्ट्रपति अशरफ गनी ने अफगानिस्तान की ओर से वार्ता करने पर तालिबान की विश्वसनीयता पर सवाल उठाए हैं और पूछा है कि यदि अफगान सरकार वैध नहीं है, तो फिर तालिबान ने किससे अपनी वैधता प्राप्त की है? वह सरकार के अपने अनुभव को बताने के लिए नजीबुल्ला सरकार से तुलना करते हैं कि कैसे उनसे शांति का वादा किया गया था, लेकिन इसके बजाय उन्हें लंबे संघर्ष में उलझा दिया गया था।

अफगानिस्तान में भारत की भूमिका को न केवल सीमित करके देखा गया है, बल्कि उसके योगदान को खुद ट्रंप ने नजरंदाज किया है। यहां यह उल्लेखनीय है कि अफगानिस्तान में दक्षिण एशिया से भारत सबसे बड़ा दानदाता है और उसने वहां तीन अरब डॉलर का निवेश किया है। विकास संबंधी उसकी मदद के बावजूद अफगानिस्तान में क्षेत्रीय सहमति उसके बिना बनाई जा रही है। खलीलजाद जनवरी में भारत गए थे, पर उससे कुछ ठोस नहीं निकला। उन्होंने भारत-अमेरिका संबंधों को याद करते हुए ट्वीट किया था कि 'अफगानिस्तान में स्थायी शांति के लिए प्रतिबद्ध'। लेकिन हकीकत यह है कि फरवरी के अंत में वार्ता प्रक्रिया की बहाली में भारत को शामिल नहीं किया गया।

पाकिस्तान लगातार दावा करता है कि अफगानिस्तान में भारत की कोई भूमिका नहीं है और लगता है कि नाटो भी ऐसा सोचने लगा है। नाटो के राजनीतिक मामलों के सहायक महासचिव अल्जेंद्रो अलवार्गोन्जालेज ने कहा है कि अफगानिस्तान में भारत की प्रमुख भूमिका है, वैसे ही जैसे सैकड़ों अन्य की। इससे ऐसा लगता है कि जैसे उनकी मंशा है कि भारत को वहां सिर्फ वार्ता में शामिल नहीं किया जा सकता, क्योंकि वहां पाकिस्तान है। भारत की उपेक्षा अतीत की तरह अब भी हो रही है, पर वह अफगान सरकार के साथ है और चाहता है कि वहां शांति प्रक्रिया अफगान नेतृत्व और नियंत्रण में हो।

लेखिका नेशनल यूनिवर्सिटी सिंगापुर में शोधार्थी हैं।

खुली खिड़की

वस्त्र निर्यात में हम

टेक्सटाइल निर्यात के मामले में चीन दुनिया में अव्वल है, उसके बाद यूरोपीय संघ का स्थान है और तीसरे स्थान पर हमारा देश है, जहां वर्ष 2018 में 17 अरब डॉलर का टेक्सटाइल निर्यात हुआ।

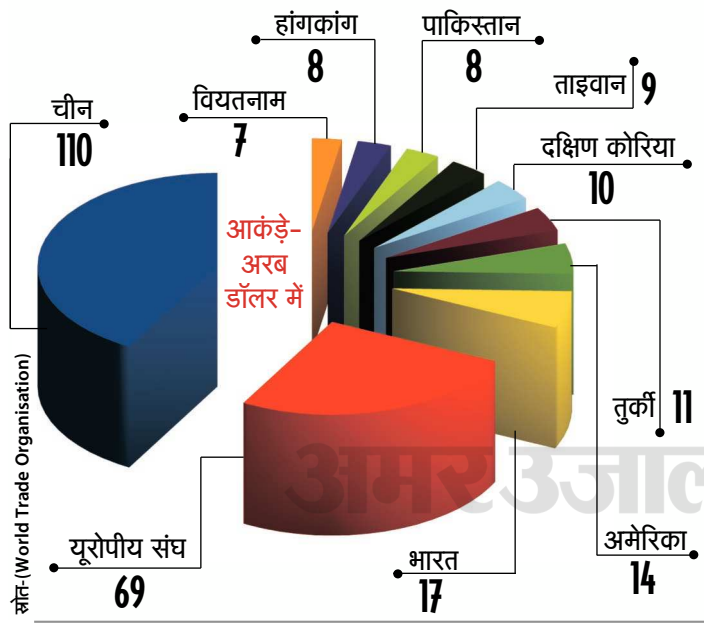

गुरुदेव का ज्ञान

सत्संग

शाम का समय था। गुरुकुल में पढ़ने वाले बच्चे खेल रहे थे। आचार्य वहीं एक पेड़ के नीचे बैठे हुए कोई काम कर रहे थे। तभी कुछ बच्चे एक साथ पेड़ों पर चढ़ गए। थोड़ी देर एक डाली से दूसरी डाली पर कूदने के बाद वे नीचे उतरने की तैयारी करने लगे। जैसे ही वे झुंड में नीचे उतरने लगे, आचार्य उठकर खड़े हो गए और बच्चों से कहने लगे, बच्चो, सावधानी से नीचे उतरना। होश मत खोना। बच्चों ने गुरुदेव की बात ध्यान से सुनी, फिर एक-एक कर आराम से नीचे उतरने लगे।

उनमें से एक बालक पेड़ से उतरने के बाद भागा नहीं, बल्कि आचार्य के पास जाकर उसने पूछा, गुरुदेव, हम जब पेड़ पर चढ़ रहे थे, तब हमें आपने कुछ नहीं कहा। जब हम एक डाल से दूसरी डाल पर कूद रहे थे, तब भी आपने कुछ नहीं कहा। जबकि ऊपर खतरा था। उतनी ऊंचाई पर पहुंचने के बाद जब हम नीचे उतर रहे थे, तभी आपने हमें सतर्क रहने के लिए क्यों कहा, जबकि नीचे उतरते हुए तो कोई खतरा नहीं था?

आचार्य ने प्रसन्न होकर कहा, वत्स, जहां कोई खतरा नहीं होता है, वहीं दुर्घटना होने का डर ज्यादा होता है, क्योंकि आदमी लापरवाह हो जाता है। ऊपर कोई खतरा नहीं था, क्योंकि तुम सजग थे। पर उतरते हुए तुम खुद ही स्वीकार रहे थे कि खतरा नहीं है। इसीलिए मैं तुम सबको सतर्क कर रहा था। उस बालक को जीवन की एक बड़ी सीख मिली।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

आदिल, पिता और फुटबॉल

एक खिलाड़ी की कहानी, जिसने दिवंगत पिता की बात से प्रेरित होकर हारी हुई टीम को जीत दिला दी।

आदिल पांचवीं कक्षा में था, जब उसके पिता ने उसे फुटबॉल लाकर दी। आदिल को फुटबॉल खेलने में मजा आने लगा। स्पोर्ट्स अकादमी में उसका दाखिला भी हो गया। रईस ध्यान रखता था कि आदिल प्रैक्टिस न छोड़े। पर पांच साल में एक बार भी उसे टीम की तरफ से खेलने का मौका नहीं मिला, क्योंकि कमजोर मानकर कोच उसे अतिरिक्त खिलाड़ी के तौर पर रखते थे। मैच के बाद हर बार वापस लौटकर रईस के पूछने पर वह चुप्पी साध जाता था। रईस बेटे का मनोबल बनाए रखने के लिए कहता, मुझे यकीन है कि जिस दिन तुम खेलोगे, पूरा स्टेडियम तुम्हारा फैन हो जाएगा। दुर्भाग्य से एक दिन सड़क दुर्घटना में रईस की मृत्यु हो गई। कोच ने आदिल को एक हफ्ते की छुट्टी दी। लेकिन वह दूसरे ही दिन स्टेडियम पहुंच गया। उस दिन दूसरे राज्य के साथ दोस्ताना मैच था और आदिल की टीम दो गोल से पीछे थी। आदिल ने कोच से खेलने देने की गुजारिश की। कोच जानता था कि टीम हार जाएगी। उन्होंने आदिल को मैदान में उतार दिया। साथी खिलाड़ी उसे देख चकित थे, क्योंकि दो दिन पहले ही उसके पिता की मृत्यु हुई थी। देखते ही देखते मैच पलटने लगा। आदिल को मैदान में कोई रोक नहीं पा रहा था। उसने दो गोल दागे और अपने साथी फॉरवर्ड को तीसरा गोल करने के लिए लगातार पास दे रहा था। खेल खत्म होने से ठीक पहले उसकी टीम 3-2 से जीत गई। साथियों ने आदिल को कंधे पर उठा लिया। मैच के बाद कोच ने आदिल को फूट-फूटकर रोते देखा।

उन्होंने आदिल के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, काश, आज तुम्हारे पिता तुम्हें खेलते हुए देख पाते। आदिल ने कहा, सर, मेरे पिता नेत्रहीन थे। आज पहली बार उन्होंने मुझे खेलते हुए देखा होगा।

कई बार दूसरे का भरोसा भी हमें नई ऊर्जा से भर देता है।